सिरुली हनुमान मंदिर

ओडिशा आर्यावर्त्त की पावन धरा का सांस्कृतिक केन्द्र बिंदु है ओडिषा प्रदेष की पतितपावनी नगरी पुरी जिसे जगन्नाथपुरी के नाम से जाना जाता है।स्कन्द पुराण,ब्रह्म पुराण और मत्स्य पुराण में इसकी विस्तृत चर्चा है।महाभारत एवं रामायण काल में भी जगन्नाथ जी और उत्कल की चर्चा हुई है।सच कहा जाय तो सनातनी परंपरा के आधार पर ओडिषा के कुल चार तीर्थ क्षेत्र हैं:षंख,चक्र,गदा और पद्म क्षेत्र।भुवनेष्वर को चक्र क्षेत्र,जाजपुर को गदा क्षेत्र,कोणार्क को पद्म क्षेत्र और पुरी धाम को षंख क्षेत्र कहा जाता है।ओडिषा प्रदेष के घर–घर,गांव–गांव यहां तक कि पूरे प्रदेष के एकमात्र इष्ट देवता जगन्नाथजी हैं जिनकी विष्व प्रसिद्ध रथयात्रा प्रतिवर्ष आषाढ़ षुक्ल द्वितीया को पुरी धाम में अनुष्ठित होती है जिसे जगन्नाथ भगवान की गुण्डीचा यात्रा,जनकपुरी यात्रा,नवदिन यात्रा,घोष यात्रा,पतितपावनी यात्रा और रथयात्रा के नाम से जाना जाता है।2015 में जगन्नाथजी का नवकलेवर हुआ है इसलिए इसलिए इससाल की रथयात्रा जो 18जुलाई,2015 को अनुष्ठित होगी उसका बड़ा ही महत्त्व होगा जिसके मद्देनजर ओडिषा प्रदेष सरकार ने लगभग 50लाख जगन्नाथ भक्तों के पुरी धाम आगमन और उनकी रथयात्रा को देखने के लिए बड़ा ही व्यापक इंतजाम किया है।एक तरफ पुरी पहुंचने के लिए पूर्वतट रेलवे ने सैकड़ों की संख्या में पैसींजर टेन चला रखा है वहीं कटक–पुरी राजमार्ग को

ओडिषा में सैकड़ों जगन्नाथ मंदिर,षिव मंदिर,देवी मंदिर और हनुमान मंदिर हैं।यहां के पुरी धाम का सिद्ध हनुमान मंदिर,कटक का पंचमुखी हनुमान मंदिर और चंदनपुर के समीप सिरुली गांव का महावीर मंदिर अपने भक्तों की आस्था और विष्वास का जगन्नाथजी की तरह ही प्रतीक बन चुका है।

यह सिरुली महावीर मंदिर ओडिषा की राजधानी भुवनेष्वर से करीब 60 किलोमीटर की दूरी पर पुरी धाम के रास्ते में सिरुली गांव में निर्मित है इसीलिए इसे सिरुली महावीर मंदिर के नाम से जाना जाता है।कहते हैं कि इस मंदिर का निर्माण गंगवंष के प्रतापी राजा अनंग भीमदेव तृतीय ने किया था।एक किंबदंती के अनुसार भगवान जगन्नाथ अपने प्रहरी के रुप में महावीरजी को पुरी धाम के श्रीमंदिर में रखे थे। महावीर जी रात में बहुत खर्राटे लेते थे जिसके कारण माता लक्ष्मी सो नहीं पातीं थीं।ऐसे में माता लक्ष्मी ने जगन्नाथजी से षिकायत की कि वे अपने प्रहरी महावीरजी को जल्द से जल्द वहां से हटायें और कहते हैं कि जगन्नाथजी के आदेषानुसार महावीरजी पुरी से सिरुली गांव आये और आज भी वहीं पर हैं। एक जानकारी के आधार पर महावीर जी जब सिरुली आ रहे थे तब रास्ते में एक किसान अपने खेत में हल चला रहा था जिसकी तेज फाल से

महावीर जी की लंबी पूंछ कट गई और देखते ही देखते वह किसान बेहोष हो गया। जब उसके होष आये तो उसने यह संकल्प लिया ि कवह अपने सिरुली गांव में महावीर जी का मंदिर बनाएगा और उसीने सिरुली महावीर मंदिर बनवाया।

सिरुली महावीरजी का एक भक्त आज से करीब 19 साल पूर्व उनके दर्षन के लिए सिरुली पहुंचा लेकिन वहां के टूटे मंदिर को देखकर उसे नये सिरे से बनाने का संकल्प लिया और कुल 27 लाख रुपये की लागत से करीब 8 सालों के भीतर उस मंदिर की बाहरी और भीतरी दीवारों एवं पूरे प्रांगण को नया बना दिया।

आज सिरुली महावीर मंदिर में मकरसंक्राति,रामनवमी और डोलपूर्णिमा के पावन अवसर पर लाखों भक्त सिरुली आते हैं और भगवान महावीर जी के दर्षन करते हैं। प्रसाद के रुप में मंदिर का प्रसाद चूड़ा घसा और एण्डूरी पीठा बड़े चाव से ग्रहण करते हैं।उस मंदिर में अनेक पुजारी जो पुरी धाम के श्रीमंदिर की रीति–नीति की तरह ही महावीर जी की नित्य पूजा करते हैं।प्राप्त जानकारी के आधार पर वहां एक तालाब है जिसे अंजनी तालाब कहा जाता है जिसमें महावीर जी भगवान जगन्नाथ की रथ यात्रा के क्रम में 21 दिवसीय चंदनयात्रा की तरह ही नौका विहार करते हैं।उस मंदिर में गणेषजी,महिसासुरमर्दिनी देवी दुर्गा माता,षिवलिंग और नंदी बैल की प्रस्तर की मूर्तियां हैं। वहां के महावीर जी की मूर्ति एक ही काले प्रस्तर से बनी है। दीवारों पर नवग्रह की खुदाई की गई है।प्रवेष महाद्वार पर प्रस्तर के दो सिंह दोनों तरफ खड़े हैं।प्रकृति के खुले और सुरम्य वातावरण में अवस्थित यह महावीर मंदिर अब पूरे भारत के महावीर भक्तों की आस्था और विष्वास का एकमात्र मंदिर बन चुका है जहां पर हर दिन देष–विदेष से महावीरजी के भक्त तो आते ही हैं खासकर मंगलवार और षनिवार को हजारों की संख्या में भक्त उनके दर्षन हेतु आते हैं और उनके दर्षन मात्र से ही अपनी मनोकामना की पूर्ति अवष्य करते हैं।

अषोक पाण्डेय

.